International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राग विस्तार में निबद्ध और अनिबद्ध क्रियाओं का महत्व
(सितार वादन के संदर्भ में)

डॉ. संगीता गोरंग
एसोसियेट प्रोफेसर
संगीत विभागाध्यक्षा
के.वी.ए. डी.ए.वी. कॉलेज फार वूमन, करनाल

सारांश

स्वरों की वह सुव्यवस्थित रचना, इस की सृष्टि करे, संगीत कहलाती है। सामान्य अर्थ में राग रंजकता का द्योतक है। दूसरे अर्थ में, राग एक ऐसा नादमय व्यक्तित्व की प्रतीक है, जो स्वर देह और भाव देह से समन्वित है। गीत के प्राधान्य में ही संगीत शब्द की सार्थकता है। गीत, वाद्य तथा नृत्य की इस व्रयी में गीत सदैव अग्रसर रहा है, तो अन्य दो उसके अनुगामी हैं।

> "Swara, Tala ad Laya, these are the three basic elements of Sangeet. It means that Sangeet is used for its three fold meaning, namely vocal music, instrumental and dancing. Sangeet, as a combination of these three parts, pleases and soothes the minds of living beings."

सम्यक् प्रकार से अर्थात् स्वर, ताल, शुद्ध आचरण, हाव-भाव और शुद्ध मुद्रा आदि सहित गाया जाए, वही संगीत कहलाता है।

"सम्यक् प्रकारेण यद् गीयते तत्संगीतम्"

गीत, वाद्य तथा नृत्य-इन तीनों का आधार स्वर तथा लय है। स्वर तथा लय नाद के परिष्कृत रूप हैं। यही कारण है कि ये तीनों कलाएँ संगीत के अन्तर्गत मान्य हैं। इन तत्त्वों में गीत की उपयोगिता की प्रधानता है, क्योंकि गीत में स्वर और लय के साथ शब्द का योग बन जाता है।

भारतीय परम्परानुसार संगीत का सम्बन्ध वेदों से मान्य है। वेद का बीज-मन्त्र है ओम्। ओम् के तीनों अक्षर अ, उ और म तीन ईश्वरी शक्तियों के द्योतक हैं:

अ=ब्रह्मा की शक्ति का द्योतक है।

उ=विष्णु की शक्ति का द्योतक है।

म=महेश की शक्ति का द्योतक है।

इन त्रिशक्तियों का पुंज ही 'त्रिमूर्ति' परमेश्वर है। इन तीन अक्षरों का ग्रहण ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद से किया गया है। इन अक्षरों के संयोग से ही ओम् शब्द निर्मित हुआ है। संगीत के सप्त स्वर षड़ज, ऋषभ आदि ओंकार (ओम्) के ही अन्तर्विभाग हैं। शब्द और स्वर की उत्पत्ति ओम् के गर्भ से हुई है। मुँह से उच्चारित शब्द ही संगीत में नाद का रूप धारण कर लेता है। यथार्थतः ओम् शब्द ही संगीत का जनक है। समस्त कलाएँ ओम् में ही

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निहित हैं। जो ओम् की साधना करने में समर्थ होते हैं, वे ही संगीत का यथार्थ रूप ग्रहण करने में सफल होते हैं। इसमे लय, ताल, स्वर का समावेश है।

भारतीय विद्वानों ने एक ओर संगीत की उत्पत्ति हृदयगत भावों से ही मानी है, तो दूसरी ओर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति संगीत से। संगीत चाहे कहीं का हो, वह भारतीय हो या पाश्चात्य, आदि काल से जन-जीवन से सम्बद्ध रहा है। ग्रीक विचारक पायथागोरस के मतानुसार, "विश्व के अणु-रेणु में संगीत परिव्याप्त है।"प्लेटो के कथनानुसार, "समस्त विज्ञानों का मूलाधार संगीत है तथा इसका निर्माण विश्व की वर्तमान विसंवादी प्रवृत्तियों के निराकरणार्थ ईश्वर के द्वारा हुआ है।"संगीत का माध्यम अति सूक्ष्म है, इसकी सृष्टि नाद से हुई है। नाद ब्रह्म है और मनुष्य का अन्तःकरण ब्रह्म-स्वरूप हैं अतः संगीत एक प्राकृतिक तत्त्व है। संगीत एक कला तो है ही। इसका सीधा सम्बन्ध मनुष्य से संयुक्त होने के कारण हम इसे सामाजिक विज्ञान, सोशल साइंस या वायोनेचुरल साइंस भी कह सकते हैं। यह एक ऐसी कला है, जो स्वतः में पूर्ण है। इसलिए ललित कलाओं में इसे सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

भारतीय संगीत में 'राग' संस्कृत की 'रंज' धातु से बना है। रंज का अर्थ है रंगना। संगीतज्ञ मन और शरीर को संगीत के सुरों से रंगता ही तो है। रंग में रंग मुहावरे का अर्थ ही है कि सब कुछ भुलाकर मग्न हो जाना या लीन हो जाना। संगीत का भी यही असर होता है। जो रचना मनुष्य के मन को आनंद के रंग से रंग दे, वही राग कहलाती है।

राग शब्द के लिए प्रेम, अनुराग, अनुरक्ति, आकर्षण और अनुरंजन इत्यादि शब्दार्थ हैं, जिसमें 'र' का अर्थ राजते, प्रकाश्ते, शोभित है तथा 'ग' का अर्थ है-गमन करना, विशिष्ट स्वर रचना का चलन करना, इत्यादि है अतः विशिष्ट स्वर, वर्ग, ध्वनि भेद से युक्त रचना व उसका गायन एवं वादन जो मानव मन को अनुरंजित करता है, वह कहलाता है।

मतंग मुनि के अनुसारः-

योंध्वनि-विशेषस्तु स्वर-वर्ग-विभूषितः
रजंको जन चित्तानां स राग कथितो बुधे

राज के क्रमिक विस्तार के लिए हम राग को दो विभिन्न क्रियाओं में बाँटते हैं।

1. अनिबद्ध योजना
2. निबद्ध योजना

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अनिबद्ध योजना :-ताल रहित राग विस्तार को अनिबद्ध योजना कहते हैं, जिसमें आलाप, स्वरभराव, जोड आलाप, जोड़तान, जोड़झाला के अन्तर्गत मीडं, कृन्तन, गमक, खटका, मुर्की, कण, जमजमा, घसीट इत्यादि सांगीतिक क्रियाओं के प्रयोग से कलाकार अपनी कल्पना के अनुसार राग को सजाता है, संवारता है।

निबद्ध योजना :-निबद्ध योजना में लय तथा ताल सहित राग विस्तार क्रिया में गत, विलम्बित गत एवम् वादन क्रियायें, लयकारी, गतकारी, छदं, द्रुतगत तान, झाला इत्यादि विभिन्न क्रियायें आती हैं।

आलाप :-सर्वप्रथम राग विकास की क्रिया में आलाप का स्थान है। भारतीय संगीत में राग का आधार स्तम्भ आलाप, जिस पर राग रूपी भवन टिका हुआ है, गीत, धुन राग के बाह्य रूप का निर्माण करते हैं, पर आलाप तो राग की आत्मा है, जिस के विस्तार करने में ही राग की सुन्दरता केंद्रित रहती है। राग की आकृति बनाते हुए एक-एक स्वर रूपी ईंटों को जब कलाकार बढ़ाते चले जाते है, तो राग रूपी भवन का निर्माण होता है या विस्तार करना। इसके प्रस्तुतिकरण में भाव पक्ष तथा कला पक्ष दोनों विधाओं का महत्व है।

आलाप के प्रत्येक रूप में कभी उत्कण्ठा जागृत हो उठती है तो कभी विसर्जन यही तो आलाप का सौंदर्य है।

आलाप का प्रथम चरण है स्वरित् अर्थात् छेड़ :- छेड़ क्रिया करते समय सितार वाद्य में से ध्वनि इस प्रकार उत्पन्न की जाती है कि कलाकार तथा श्रोता एक रसता में बंध जाएँ तथा उस झंकार से श्रोता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया जाए।

तत्तश्चात् स्वर लगाव यानि कि अपने राग के मुख्य स्वरों का प्रयोग कर राग को श्रोताओं पर प्रकट करना या षड़ज स्वर का अनेक प्रकार से प्रयोग करना अर्थात् षड़ज का क्रमिक विस्तार करना। अतः आलाप के अन्तर्गत यह क्रिया स्थाई कहलाती है।

आलाप करते समय आलाप्ति का ध्यान रखा जाता है जिस में स्वस्थान के नियमों का पालन किया जाता है। नियमों के अनुसार राग क्षेत्र को चार भागों में बाँटा जाता है। प्रथम भाग में राग के अंश स्वर को केंद्र बिंदु मान कर आस-पास के स्वरों को विभिन्न प्रकार के केन्द्रित किया जाता है। इसी अंश स्वर के विकास को स्थाई का आलाप कहा जाता है।

आलाप का दूसरा क्षेत्र अंश स्वर से चौथे स्वर में केन्द्रित किया जाता है जिसमें द्वयर्थ स्वर भाग का या संवादी स्वर तक के विस्तार करने की योजना रहती है।

आलाप का तीसरा विस्तार क्षेत्र द्विगुण स्वर अर्थात् षड़ज या अंश स्वर से दुगुने ऊँचे स्वर तक के क्षेत्र में आलाप या राग विकास करने की क्रिया को अन्तरा या तार स्थान क्षेत्र भी कहा जाता है।

आलाप के चौथे चरण में द्वयर्थ और द्विगुण स्वरों के आगे द्विगुण के उत्तरार्ध तक के क्षेत्र में विस्तार करने की योजना रहती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आलाप के इन्हीं भावों में हम चार विभिन्न क्रियाओं द्वारा चलन करते हैं जिसे स्थाई, अन्तरा, संचारी तथा आभोग कहते हैं।

स्थाई आलाप का उठान मध्य षड़ज स्वर से होता है। अन्तरे के आलाप का उठान मध्य सप्तक मध्यम अथवा पंचम से, संचारी आलाप का चलन मध्य सप्तक में तथा आभोग आलाप का तीनों सप्तकों में करके कलाकार रसोत्पादन करता है तथा राग के क्रमिक विकास के अगले चरण जोड़ालाप में परिवर्तित करता है।

जोड़ आलाप :- ताल रहित स्वर प्रयोग को छेड़ तथा मिजराब के विशेष आघातों द्वारा की जाने वाली क्रिया को जोड़ालाप कहते है। इस क्रिया में कलाकार विभिन्न स्वर संयोजनों से श्रोताओं को लय के हिलोरों द्वारा आनन्दित कर देता है तथा इसी प्रकार यह क्रिया भी भाव पक्ष तथा कला पक्ष दोनों को उजागर कर राग विकास में सहायक सिद्ध होती है। इसी में कलाकार तानों का प्रयोग, गमक का प्रयोग तथा अन्य क्रियाएँ जो कला पक्ष को उजागर करती है पेश करता है तथा इसके पश्चात कलाकार राग विकास के अगले चरण जोड़ालाप में प्रवेश कर अपनी पूर्ण तैयारी से श्रोताओं को परिचित करवाता है, इस क्रिया में लय चक्र को विभिन्न ढंगों से बाँट कर श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध करता है।

राग विकास के अगले चरण में निबद्ध योजना के अन्तर्गत बन्दिश (गत), विलम्बित एवं उसके विकास के अन्तर्गत तान, तोड़ों, तिहाईयों, लयकारी, गतकारी, छन्तु, इत्यादि अनेक क्रियाओं द्वारा श्रोताओं को बाँधे रखता है। समयानुसार कलाकार इन सभी को योजनाबद्ध तरीके से योजित करता है। तथा समयाभाव के होते हुए इन क्रियाओं को कम भी कर सकता है।

तत्तश्चात् द्रुतगत के अन्तर्गत बंदिश, तान, टुकडे, तिहाईयाँ, झाला इत्यादि अनेक प्रकार की क्रियाओं द्वारा राग विकास करने में सफल होता है।

राग विस्तार करने में संगत कार की भी विशेष भूमिका रहती है। जिसमें संगत कलाकार उठान, पेशकार, कायदे, टुकड़े, रेले, सवाल-जवाब इत्यादि क्रियाओं द्वारा श्रोताओं को लिए आकर्षण का केन्द्र विषय बनाए रखते है।

सहायक ग्रन्थ सूचीः-

भारतीय संगीत वैज्ञानिक विश्लेषण. डा0 स्वतन्त्र शर्मा

श्रीमद भगवत गीता - प्र. गीता प्रेस, गोरखपुर - शवौ संस्करण

संगीत शास्त्र - के. बासुदेव शास्त्री

संगीत रत्नाकार - पं. शारंगदेव (प्रथम स्वराध्याय)

भारतीय संगीत का इतिहास - परांजपे, पृ. 17
भारतीय संगीत का इतिहास, डॉ. परांजये, पृ. 19-20

आचार्य याज्ञवल्क्य - "याज्ञवल्क्यस्मृति"
के. वासुदेवशास्त्री- संगीतशास्त्र पृष्ठ 2
डॉ. डी.एस. नस्ला-संगीत समीक्षा, पृ. 108-109